ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 12 अंक- - 22 फरवरी- II, 2012 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.00 रु.

विश्व में शांति अध्यात्म से आयेगी - दादी जानकी

पाण्डव भवन के प्रांगण में शांति स्तंभ पर देश-विदेश के हजारों लोगो ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

माउण्ट आबू। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक निराकार परमात्मा शिव, साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की ४१वीं पुण्यतिथि पर, अन्तरराष्ट्रीय मुख्यालय पांडव भवन परिसर के 'ओम शांति भवन' में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसे सम्बोधित करते हुए संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि मानवीय एकता व राष्ट्रीय अखंडता को बनाए रखने के लिए हमें भेद-भाव से ऊपर उठकर आध्यात्मिकता को अपनाना होगा। क्योंकि यही वह माध्यम है जो देश को एकता के सूत्र में पिरो सकता है और विश्व को शांति का संदेश दे सकता है। उन्होंने ब्रह्मा बाबा की जीवनी बताते हुए कहा कि ब्रह्मा बाबा ने परमपिता शिव परमात्मा की ओर से दिए गए आध्यात्मिक ज्ञान की बारीकियों को समझकर मानव के मन में फैले अज्ञान को दूर कर ज्ञान की नई रौशनी दी। जिससे मानव को स्वयं की पहचान मिली और जीवन जीने का उद्देश्य मिला।

संस्था की संयुक्त सह मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने ब्रह्मा बाबा के संग के अपने अनुभवों को याद करते हुए बताया कि ब्रह्मा बाबा त्याग व तपस्या की खुली किताब की तरह थे। उन्होंने समाज के हर वर्ग को नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने की प्रेरणा दी। उनका जीवन हम सभी लोगों के लिए एक आदर्श है। ईशू दादी ने कहा कि ब्रह्मा बाबा की विश्व के कल्याण की विचारधारा के परिणाम स्वरूप ही आज संस्था समाज सेवा में सफलतापूर्वक अपना योगदान दे रही है। ज्ञान सरोवर की निदेशिका डॉ.निर्मला ने कहा कि बाबा अक्सर कहा करते थे कि अध्यात्म के पथ पर अग्रसर होने वाले व्यक्ति को स्वयं को देह नहीं बल्कि आत्मा समझकर परमात्मा को याद करना चाहिए।

संस्था के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने कहा कि ब्रह्मा बाबा ने योग को कर्म में समाहित करने की सहज शिक्षा देकर संस्कारों को श्रेष्ठ बनाने को प्रोत्साहित किया। ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि बेहतर समाज की स्थापना को ब्रह्मा बाबा के सार्थक प्रयासों के परिणामस्वरूप ही विश्व भर में सेवाओं का विस्तार हुआ। इस अवसर पर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के समाधि स्थल 'शांति स्तंभ' पर विश्व शांति, मानवीय एकता, देश की सुख-समृद्धि के लिए दादी जानकी की अध्यक्षता में पांचों महाद्वीपों से आये भाई-बहनों ने सामूहिक रूप से सहज राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर सभा के माध्यम से विश्व शांति के प्रकम्पन प्रवाहित किये। सुबह चार बजह से आगतुक मेडिटेशन करतें रहे ।बाबा से शक्ति व गुणों से अवगत होते रहे।

यह वो स्थान है जहां तकदीर बनती है

यह वो जगह है जहां चारों ओर तपस्या, की खुशबु नजर आती है, ये वो स्थान है जहां पर इंसानियत को स्वयं शांति के सागर परमात्मा शिव ने अपने स्नेह से सींचा है। इस धरती पर जो भी कदम रखता है उसे शांति व प्रेम की अथाह खुशी की अनुभूति होती है। और उसकी अंतरचेतना से एक धीमी आवाज स्वत: ही बाहर आने लगती है कि हमें जो पाना था सो पा लिया और क्या बाकी रहा। यह परिवार उसे अपना लगने लगता है। क्योंकि यहां के नि:स्वार्थ स्नेह व सहयोग की भावना उसे अंदर तक महसूस होने लगती है। यहां का वातावरण मन भावन व रमणीय लगता है। बाबा के कमरे में बैठते ही मधुर मुलाकात व वार्तालाप होने लगता है। यहां हर कोई सूकुन महसूस करता है। और हर दिल से यही निकलता है कि मैं यही तो चाहता था। बस लौटते समय की यहां की यादें, यहां के संस्मरण अपने मन-बुद्धि की तिजोरी में हमेशा-हमेशा के लिए बस जाती है। कोई नहीं भूल पाता यहां की अलौकिकता को । यहां आत्मबल का एहसास होने लगता है। और वो शक्ति का संचार जो स्वयं व दूसरों में आरोपित करने का साहस जुटाता है। यही वह दिन की यादगार है 18 जनवरी। जनवरी मास में तो जैसे यहां पर फरिश्ते ही दिखाई पड़ते हैं। कोई अपनी उच्चत्तम मंजिल को निहारता है तो कोई स्वयं को देख उन स्वमान में खोये दिखलाई पड़ता है, तो कोई स्वयं में छिपी अपार क्षमताओं का निखारता, टटोलता और मन ही मन खुशियों में झूमता रहता है।

यहां के वातावरण में साधना की महक चारों ओर दिखलाई पड़ने लगती है और शांति का साम्राज्य जैसे दिल को छूने लगता है। हर किसी के चेहरे से मधुरता दिखलाई पड़ने लगती है।

बस वो परमात्म प्यार का सागर हर कोई के जीवन में महकते दिखाई पड़ता है। यह वो स्थान है जहां से स्वर्णिम दुनिया का आगाज होता है। यहां का नजारा मन-मोहक व अति रमणीक है। यही वो स्थान है जहां पर स्वयं भाग्य विधाता ने हरेक की तकदीर को बैठकर तरासा है।